International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

पंत के काव्य में स्वच्छन्दतावादी विचारधारा

अर्चना कुमारी
सहायक प्राध्यापिका(एक्स्टेंशन)
विषय – हिन्दी
रा॰ स्ना॰ महाविद्यालय
गोहाना

भूमिका – हिन्दी आलोचना में स्वच्छन्दतावाद शब्द का प्रयोग अंग्रेजी शब्द रोमांटिसिज्म के अनुवाद के रूप में आचार्य रामचन्द्रशुक्ल द्वारा हुआ। यह शब्द **"रोमांटिक"** विशेषण से बना है। इस शब्द के अन्य अर्थ हैं –

1 लेटिन से निकली हुई अपभ्रष्ट लोकभाषाएं।

2 लेटिन से पूर्वोक्त भाषाओं में किया हुआ अनुवाद।

3 अपभ्रष्ट भाषाओं में लिखित पुस्तक।

4 साहस, शौर्य, कल्पना, भावना, प्रेम एवं आश्चर्यप्रधान वीरगाथाएं।

सुमित्रानन्दन पंत एवं उनके समकालीन कवियों का काव्य उपयुक्त श्रृंखला की विकसित कड़ी है। उन्होंने खुद ये स्वीकार भी किया है –

जैसे एक दिपक दूसरे को जलाता है, उसी प्रकार द्विवेदी युग के कवियों की कृतियों ने मेरे हृदय में सौन्दर्य का अनुभव करवाया उसमें एक प्रेरणा की शिखा जगायी। उनके प्रकाश में मैं भी अपने भीतर बाहर अपनी रूची के अनुकूल काव्य के उत्पादनों का चयन एवं संग्रह करने लगा।

प्रभावित करने वाले तत्व –

1 सौन्दर्य वर्णन व प्रकृति चित्रण

2 व्यक्तिवाद (मुक्ति की भावना)

3 पीड़ा, करूणा (वेदना)

4 मूल्य बोध

5 स्वतंत्र शिल्प की प्रवृति

6 परवर्ती काव्य चरण

7 परिस्थितियां

सौन्दर्य वर्णन – सौन्दर्य के बारे में चर्चा करते हुए कवि पंत कहते हैं कि सौन्दर्य की सबसे बड़ी विशेषता सुकुमारता है। सुकुमारता में मृदुलता कोमलता रहती है। सौन्दर्य वर्णन भी उन्होंने बहुत सुन्दर किया है। स्वच्छन्दता में प्रकृति का इतना मनोहर वर्णन, सौन्दर्य की सर्वांग अभिव्यक्ति एवं प्रेम का विशद चित्रण किया है। ये देखिए गुंजन की पंक्ति –

शांत सरोवर का उर,

किस इच्छा से लहरा कर,

हो उठता चंचल, चंचल।

और प्रश्नाकुलता की ये पंक्ति स्वच्छन्दतावादी प्रकृति–दृश्न भाष्य ही प्रतीत होता है पल्लव में देखिए –

स्तब्ध ज्योत्सना में जब संसार,
चकित रहता शिशु सा नादान,
विश्व के पलकों पर सुकुमार,
विचरते जब स्वप्न अजान,
न जाने नक्षत्रों से कौन,
निमंत्रण देता मुझको मौन।

कवि ने स्वच्छन्दता के साथ काव्य को इतना भावप्रवण बना दिया कि भाव सौन्दर्य की दृष्टि से उनका स्थान अंसंदिग्ध है।

व्यक्तिवाद अर्थात मुक्ति की भावना – स्वच्छन्दतावाद न केवल ईश्वरीय सत्ता की अपेक्षा मानव को सर्वाधिक महत्व देता बल्कि वह मानव की बनाई गई व्यवस्थाओं मर्यादाओं और बंधनों से ऊपर उसके मूलभूत व्यक्तित्व को स्वीकार करता है। पंत के काव्य में व्यक्तिवाद के अनेक प्रच्छन्न आयाम है। प्रकृति को प्रेम करने वाला यह कवि मानवता को भी स्वीकार करता है। यह चिर–अपेक्षित व्यक्ति के अस्तित्व की पुर्नस्थापना का ही प्रयास है –

एक कुसुम कलिका उस वन की, मुझको भी कहलाने दो,

मधुबाला का हृदय मनोहर, मुझको भी बहलाने दो।

स्वच्छन्तावादी कवि का आदर्श यही है पर वह वास्तविकता के जगत में इसे असंभव पाकर कल्पना में इसे साकार करने की सोचता है। पंत की एक तारा कविता की ये पंक्तियां व्यक्ति स्वातंन्त्र्य की आकांशा की अभिक्त देखिए –

दुर्लभ से दुर्लभ अपनापना, लगता है निखिल विश्व निर्जन,

वह निष्फल इच्छा से निर्धन, आकांक्षा का उच्छसित वेग,

मानवता नहीं बन्धन अनेक।

पीड़ा और वेदना – पंत के काल में वेदना की अभिव्यक्ति निःसंदेह उनके जीवन के सूनेपन से जन्मी है पर उसमें युग की निराशात्मक स्थितियों की छाया भी है पंत का संवेदनशील हृदय निम्न कारणों से विशेष रूप से आन्दोलित था –

1 प्रणय में वियोग

2 व्यक्ति स्वातन्त्र्य का हनन

3 यथार्थ के संघर्ष में व्यक्ति की पराजय

4 सहानुभूति की उम्मीद

5 नियति की कठोरता

पंत अपने सुखमय संसार के समानान्तर अपने दुःख कुछ इस प्रकार व्यक्त करते हैं –

बालकों–सा ही तो मैं हाय, याद कर रोता हूं अनजान,

न जाने हो कर भी असहाय, पुनः किससे करता हूं मान।

पंत नियति को निष्ठुर बताते हुए अपने दुख इस प्रकार व्यक्त करते हैं –

किसी को सोने के सुखसाज, मिल गए यदि ऋण भी कुछ आज,

चुका लेता कण ही ब्याज, काल को नहीं किसी की लाज।

गुंजन के बाद पंत ने काव्य में वेदना का वर्णन तो किया पर उसमें स्वच्छन्दता ज्यादा मात्रा में छलकती है स्वच्छन्दतावादी काव्य की वेदना इस कवि की उन्मुक्त जीवन शैली का ही परिणाम है।

मूल्य बोध – जो व्यक्ति स्वयं को काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों के लिए खुला छोड़ देता है उसका जीवन भ्रष्ट व नष्ट होने लगता है। अतः जीवन को सार्थकता और मूल्यता प्रदान करने वाले गुणों, आदर्शों और लक्ष्यों को ही मूल्य बोध कहते हैं। और मानव जीवन में समाज में सुख प्राप्त करना है तो मूल्यों का होना बहुत आवश्यक है। हम मूल्य बोध का जिक्र करें व महात्मा गांधी का नाम न आए ये असम्भव है, पंत जी भी उनके विचारों से सहमत थे। गांधी जी को शुद्ध बुद्ध कहकर कवि ये कहते हैं –

आए तुम मुक्त पुरूष कहने,
मिथ्या जड़ बंधन, सत्य राम,
नानृतं जयति सत्यं, मा मैः ,
जय ज्ञान, ज्योति, तुमको प्रणाम।

बुरी प्रवृति में लिप्त नौजवानों को देख कर उनका हृदय छलनी हो उठता था। उनका मानना था कि अगर परस्पर भाईचारा व मूल्य बोध फैले तो देश का विकास भी होगा और स्वर्ग की चिंता न रहेगी –

क्यों न एक हों मानव–मानव सभी परस्पर,
मानवता निर्माण करे जग में लोकोत्तर।
जीवन का प्रासाद उठे भू पर गौरवमय,
मानव का साम्राज्य बने–मानव हित निश्चय।
जीवन की क्षण धूलि रह सके जहां सुरक्षित,
रक्त मांस की इच्छाएं जन की हो पूरित।
मनुज प्रेम से जहां रह सके मानव ईश्वर,
और कौन सा स्वर्ग चाहिए तुझे धरा पर ?

स्वतंत्र शिल्प योजना – सुमित्रानन्दन पंत ने भी स्वच्छन्दतावादी विचारधारा से प्रभावित हो बाकि सभी छायावादी विचारकों की तरह अंग्रेजी कविताओं में प्रयुक्त शब्दों का प्रयोग अपने काव्य में किया। ये देखिए –

1 यह कैसा स्वर्गीय हुलास

2 यह सुवर्ण का काल

3 वृथा रे ये अरण्य चित्कार

इन शब्दों से भिन्न पंत की भाषा में कोमलता व माधुर्य है। पंत के साहित्य का जितना विस्तार है उतना ही मात्रत्मक विस्तार भी है। कवि पंत कहीं–कहीं अपनी कल्पना के बल पर यथार्थ तथ्यों को बटोर लेते हैं इस तरह अपनी संग्रहात्मिकता का परिचय देते हैं –

रूढ़ि–रीति, न्याय नीति,
वैर प्रीति, इति भीति,
क्षुधा, तृष्णा, सत्य भृषा,
लज्जा, भय, रोष, विनय
राग, द्वेष, हर्ष, क्लेश,
प्रलयंकर नृत्य करो
जीवन जड़ सिन्धु तरो।

निष्कर्षत – पंत एक काव्य पंड़ित है। उन्होंने न सिर्फ भिन्न–भिन्न प्रकार की शिल्प योजना अपनाई अपितु जगह–जगह पर चुस्त, गठित और सशक्त गद्य भाषा का भी

प्रयोग किया है। कवि का शिल्प इस तरह पाठक को अपनी तरफ आकर्षित करता है कि उसका वेग व गति मन को तृप्त कर देती हैं न चाहते हुए भी मन लालायित हो उठता है –

पर्वत से लघु धूलि धूलि से,
पर्वत बन पल में साकार।
काल चक्र से चढ़ते–गिरते,
पल में जलधर फिर जलधार।

भाषा ऐसी प्रतीत हो रही है मानो कलात्मक संकेत पर नाचने लगी हो। जहां करूण में गुंजन सुनाई पड़ता है, वहीं वीर रस में मानों अग्नि की बारिस होने लगी।

परवर्ती काव्य चरण – पंत की काव्य साधना सतत् विकासशील रही है। पंत जी के काव्य में समय–समय पर नए मोड़ लिए व सिर्फ प्रकृति के सुकुमार कवि ही नहीं रहे बल्कि दबे–दबे भाव उनके स्वच्छन्दता को दर्शाते रहे। समय–समय पर उनके काव्य में पहले से अलग भाव नजर आये। एक तरफ जहां छायावादी कविता में सौन्दर्य प्रेम, राष्ट्रीयता, मानवतावाद आदि उदात् प्रवृतियां दिखाई दी वहीं प्रगतिवादी सोपान पर पहुंचकर उनकी काव्य साधना में युगान्तकारी परिवर्तन घटित हुआ। कभी वो व्यक्ति परक सोच के साथ दु:खी, कमजोर वर्ग को दर्शाते नजर आये तो कहीं करूण भाव में दबकर नम आंखों से श्रंद्धांजली भी अर्पित करते नजर आते हैं। और जैसे–जैसे इनकी कला प्रोढ़ होती गई वैसे–2 ये ज्यादा भिन्न प्रकार की रचनाओं के साथ हमारे सामने आये। इनके अलग–अलग चरण आते गए व नई–नई भावनाएं हमें देखने को मिली। कहीं इनकी दृष्टि सजीवता लिए हुए थी तो कहीं अनुभूतिगत उष्मा व मार्मिकता के दर्शन हमें मिलते हैं।

परिस्थितियां – बदलती हुई परिस्थितियां काव्य को भी प्रभावित करती है ठीक उसी प्रकार पंत के काव्य में भी यही बदलाव हम अनुभव कर सकते हैं। गद्य में इन्होंने हर नई विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट दर्शाया है। पंत ने समाज का अवलोकन व चित्रण बड़ी गहराई से किया है और सच्चा लेखक या कवि वही होता है जो सामाजिक परिस्थितियों व उस समय की परिस्थितियों पर अपना अनुभव दर्शाते हुए चित्रण करे। इनका विश्वास था जब तक समाज में जीर्ण परिस्थितियां रहेंगी, समाज

का विकास असंभव है। उनका मानना था कि मानव में मानवपन जब तक नहीं होगा समाज खिलखिला नहीं सकता –

झरे जाति–कुल–वर्ग–पर्ण धन,
अन्ध नीड़ से रूढ़ि रीति छन
व्यक्ति–राष्ट्र–गत राग द्वेष रण,
झरे, मरे विस्मृति में तत्क्षण।

समाज का कवि ने अच्छी तरह अध्ययन किया न सिर्फ अध्ययन बल्कि कवि के कृत्य को भी मानते हुए समाज के अन्दर एक नई भाईचारे को अपनाने की मानों अपील सी करते नजर आते हैं।

निष्कर्ष – पंत के काव्य ने एक लम्बी यात्रा की है और इतने लम्बे समय को पार करने वाला कवि स्वयं अपने जीवन में उतार चढ़ाव के अतिरिक्त समाज की बदलती स्थितियों से प्रभावित न हो यह असंभव था। अपने काव्य युगान्त युगवाणी और ग्राम्या के द्वारा स्वच्छन्दतावाद को सामाजिक यथार्थ के निकट ले आते हैं। पन्त के ऊपर लिखित वर्णन से हम कह सकते हैं कि उन्होंने स्वच्छन्दतावाद में महत्वपूर्ण हस्ताक्षर किये। उन्होंने सदैव अपने काव्य में वैयक्तिक अनुभूतियों विशेषतया रोमानी वृतियों को छिपाने की चेष्टा की है। प्रकृति से अपनी काव्ययात्रा का आरम्भ करते हुए पन्त ने उसे नयी दिशाओं में मोड़ा और उसका अनेक प्रकार से उपयोग किया "पल्लव" में छाया, मौन निमन्त्रण, बादल कविताएं प्रकृति दृश्यों की दृष्टि से हिन्दी स्वच्छन्दतावादी काव्य की उपलब्धि है और इसमें सन्देह नहीं कि प्रकृति को उसकी समग्रता में पा लेने और सचित्र सम्भार के रूप में प्रस्तुत कर सकने में पंत बेजोड़ हैं। यद्यपि उनकी आदर्शवादी दृष्टि से जोड़कर देखें तो वो रोमांस मुक्त नहीं है। पंत की रोमानी दुनिया में कल्पना ने भी चार चांद लगाए इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता। स्वच्छन्दतावाद में बस ये निष्कर्ष निकलता है कि वे प्रकृति से हट कर मनुष्य के बारे में ज्यादा सोच–विचार करते हैं।

संदर्भ

1 आचार्य रामचन्द्र शुल्क, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ–575

2 श्री सुमित्रानन्दन पंत, रश्मिवंध, पृष्ठ–7

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

3 सुमित्रानन्दन पंत, छायावाद पुर्नमूल्यांकन, पृष्ठ–16

4 गुंजन, पृष्ठ–12

5 पल्लव, पृष्ठ–46

6 वीणा, पृष्ठ–35

7 गुंजन, पृष्ठ–85

8 पल्लव, पृष्ठ–28

9 पल्लव, पृष्ठ–118

10 सुमित्रानन्दन पंत, युगान्त, पृष्ठ–68

11 सुमित्रानन्दन पंत, युगवाणी, पृष्ठ–23

12 पंत पल्लव, पृष्ठ–76,142,158

13 सुमित्रानन्दन पंत युगवाणी, पृष्ठ–118

14 पंत ग्रन्थावली, पृष्ठ–7